ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-1* February- 2021
Innovation The Research Concept

हरियाणा के सन्त साहित्य में एकात्मवाद
Integralism in Saint Literature of Haryana

Paper Submission: 01/02/2021, Date of Acceptance: 23/02/2021, Date of Publication: 25/02/2021

ऋषिपाल
सह प्राध्यापक एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
बाबू अनन्त राम जनता महाविद्यालय, कौल, कैथल,
हरियाणा, भारत

सारांश

प्राचीनकाल से हरियाणा की धरती को ऋषि–मुनियों, साधु–सन्तों, मनस्वी एवं तपस्वी महात्माओं ने अपनी कर्मस्थली बनाया है। भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं हरियाणा की कुरुक्षेत्र धरती पर गीता का उपदेश सुनाया है। हरियाणा की धरती पर जब हम सन्त कवियों की बात करते हैं तो गुरु नानक देव, गरीबदास, जैतराम, शम्भू, ब्रह्मानन्द सरस्वती, नितानन्द, दादू, घीसा, चरणदास, मंगतराम, शिवदयाल, शहनशाह मस्ताना, साधूराम, हरदेदास आदि के नाम प्रमुखता व आदर से स्मरण करते हैं।

Since ancient times, the land of Haryana has been made its place of work by sages, saints and ascetic Mahatmas. Lord Shri Krishna himself has preached the Gita on the Kurukshetra soil of Haryana. When we talk of saint poets on the land of Haryana, the names of Guru Nanak Dev, Garibdas, Jaitaram, Shambhu, Brahmanand Saraswati, Nitanand, Dadu, Gheesa, Charandas, Mangataram, Shivdayal, Shahanshah Mastana, Sadhuram, Hardedas etc. are most eminently registered.

मुख्य शब्द : हरियाणा, हिन्दी कहानी, सन्त साहित्य।
Haryana, Hindi Story, Saint Literature.

प्रस्तावना

हरियाणा की धरती पर संत साहित्य की युगों–युगों से अविरल परम्परा रही है। इन सभी सन्तों ने आजीवन साधना करके आध्यात्मिक ज्ञान एवं आन्तरिक ज्ञान शक्ति को अर्जित किया है। सन्तों ने हमेशा लोकमंगल एवं कल्याण के लिए अपनी ज्ञान शक्ति को जन समर्पित किया है। सभी संत जाति, धर्म, प्रान्तीयता, समुदाय विशेष से बहुत ऊपर थे। उन्होंने समाज में व्याप्त साम्प्रदायिकता, अन्धविश्वासों, कुरीतियों, विद्रूपताओं, ऊंच–नीच के भेदभाव, असमानता आदि विसंगतियों के निराकरण के लिए शिक्षा का प्रचार–प्रसार भी किया व अपनी वाणी के द्वारा लोगों को प्रेरित भी किया। भले ही हरियाणा के सभी संत ज्यादा पढ़े लिखे नहीं थे लेकिन वे जन कवि जरूर थे। वे दरबारी कवि नहीं थे। अनेकों संघर्ष में जीवन व्यतीत करके भी इन सन्तों ने मानव कल्याण एवं मंगल के लिए साहित्य लिखा है। सच्चा सन्त अपनी सब चारित्रिक बुराईयों को दूर कर, उन गुणों को धारण करता है जो उसको सर्व दोष रहित ब्रह्म के समान निर्मल और स्वच्छ बना देता है।[1]

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य हरियाणा के सन्त साहित्य में एकात्मवाद का अध्ययन करना है।

विषय विस्तार

हरियाणा के सन्तों ने हमेशा समाज की एकता और अखण्डता पर जोर दिया है। वे भली प्रकार जानते थे कि वर्ग–भेद एवं जाति–भेद की विसंगति समाज को तोड़कर रख देगी। इसलिए उन्होंने हमेशा वर्ग–विहीन समाज का स्वप्न देखा भी है और पूरा भी किया है। हरियाणा के सन्तों के साहित्य में मानवता के उन्नयन की ही बात दृष्टिगोचर होती है। इन सभी सन्तों के साहित्यिक प्रतिमान ईश्वरीय रूप में मानव के प्रतिष्ठापक कहे जा सकते हैं। डॉ. नगेन्द्र ने भी इस सम्बन्ध को दो रूपों में माना है – 'एक क्रिया रूप में दूसरा प्रतिक्रिया रूप में। क्रिया रूप में साहित्य जीवन की अभिव्यक्ति है और प्रतिक्रिया रूप में वह जीवन का निर्माता और पोषक है।[2] डॉ॰ नामवर के अनुसार भी, ''साहित्य सत्य का उद्घाटन करता है। वह युग और काल की सीमाओं और

सतहों को तोड़ता है और अनेक भ्रमों को हटाकर सत्य को खोलकर पाठक या श्रोता के समक्ष रखता है। यह उद्घाटन कार्य ही साहित्य का रचना–कार्य है।[3] यदि समाज की यह मांग है कि साहित्य किसी बेहतर संसार की परिकल्पना कर दे तो साहित्य को उन अन्धेरों, जटिलताओं, संश्लिष्टताओं, आयामों और स्तरों से उलझना पड़ेगा, जिनका समाज विरोध करता है। उनसे जूझे बिना साहित्य उस स्तर तक नहीं पहुँच सकता। रचना दूसरों के चाहे हुए हथियारों से नहीं लड़ सकती। युद्ध वही सफल होते हैं जो अपनी जमीन पर अपने हथियारों से लड़े जाते हैं और साहित्य भी इसका अपवाद नहीं है।[4] अतः मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि हरियाणा के सन्तों का साहित्य आज के विपद एवं कलिकाल में मानव कल्याण के लिए रामबाण सिद्ध हो रहा है।

वैश्वीकरण एवं भौतिकवादी युग में आज भी इन सन्तों की वाणी जनमानस का न केवल कण्ठहार बनी हुई है बल्कि लोगों के मन में धैर्य, संतोष, समभाव एवं शांति प्रदान करती है। संत चाहे मध्यकाल के हों या फिर आधुनिक काल में सभी ने अपनी वाणी के माध्यम से जात–पात के प्रति कट्टरता, साम्प्रदायिकता एवं धार्मिक मान्यताओं से निजात दिलाने की चेष्ठा की है। मध्ययुगीन सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्था के सन्दर्भ में डॉ॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा, 'सामाजिक, धार्मिक दुर्व्यवस्थाओं का विरोध विविध संतो के उस असन्तोष का फल है जो उन्हें सामाजिक परिस्थितियों के कारण अनुभूत हो रहा था।[5] सन्तों ने समाज में निम्न जातियों के लोगों को असमानता, ऊंच–नीच आदि भेद–भावों से पीड़ित देखकर उनके प्रति अपनी सहृदयता प्रकट की। उन्होंने समता, एकात्मवाद, साम्य–भावना पर जोर दिया। दादू लिखते हैं कि दादू समि करि देषिए, कुंजर कीट समान। दादू दुबध्या दूरि करि, तजि आपा अभिमान।। काहे को दुष दीजिए, साईं है सब मांहि। दादू एक आत्मा, दूजा कोई नांहि।।[6] गुरु नानक देव जी ने हिन्दुओं और मुसलमानों के धार्मिक एवं जातीय वैमनस्य को दूर कर सामाजिक एकता स्थापित करने का प्रयत्न किया।[7] सन्तों ने सभी मनुष्यों को एक जाति का माना, मानव धर्म को एक मूल धर्म के रूप में स्वीकार किया और अपने जागृत विवेक द्वारा साक्षात्कृत सत्य को व्यावहारिक जीवन में उतारा।[8]

सन्त नानक ने भी अपनी वाणी के द्वारा जाति–पाति के बन्धनों से मुक्ति पाने की बात कही है। वे मानते थे कि सभी एक ईश्वर के ही जीव हैं। सब को ईश्वर ने एक समान शरीर दिया है। फिर भेद–भाव कैसा? वे कहते भी हैं कि – जाणहु जोति न पूछहू जाति अगै जाति न है।'[9] सभी मनुष्य भगवान के ही जीव हैं। समस्त संसार भ्रम के कारण यह नहीं जानता। जो इस को जान जाता है वो भगवान का भक्त कहलाता है। अपने और पराये के भेद से ऊपर उठकर मानव को विश्व में बन्धुत्व स्थापित करना चाहिए। गुरु नानक देव जी कहते हैं – 'आई पन्थी सगल जमाति माने जीते जगु जीते आदेश तिसे आदेसु।'[10] वर्तमान परिवेश में दादू की वाणी की प्रासंगिकता यथावत है। नित प्रतिदिन समाज में साम्प्रदायिकता अनेक धर्म–जाति को लेकर मनों में कटुता बढ़ती जा रही है। हिंसा किसी के लिए शुभ नहीं है। वे लिखते हैं कि – 'आपस कूं मारे नहीं, पर कूं मारण जाइ। दादू आपा मारे बिना, कैसे मिले खुदाई।।'[11] स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती सभी धर्मों के साम्य पर जोर देते थे। समाज में एकात्मवाद का संदेश उन्होंने अपनी वाणी के द्वारा लोगों को दिया। सभी में समभाव, प्यार, प्रेम, सद्भाव की भावना होनी चाहिए। समूची मानवता ईश्वर की रचना है। वे कहते हैं कि – हिन्दू–मुस्लिम–सिक्ख ईसाई। जैन बौद्ध सब करे कविताई।। भूले बिसरे हैं सब भाई। ब्रह्मानन्द दे सबकी दुहाई।।[12] स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'पंचरंगा झण्डा' के माध्यम से पांच रंगों – पीला, सफेद, लाल, हरा व काला को पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश का द्योतक मानते हैं। वे लिखते हैं कि – हमारा पंचरंगा झण्डा पंचायती। अखिल विश्व को देवे आजादी।।[13]

सभी सन्तों की एकात्मकता प्रगतिशील से परिपूर्ण है। प्रगतिशील का अर्थ होता है समाज को नई दिशा देना व उसका सही निर्माण करना। चरणदास ने भी यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि भगवान की भक्ति के लिए उच्च जाति का होना अनिवार्य नहीं है। भक्ति की महत्ता से सभी जाति एवं वर्ण पवित्र बन जाते हैं। वे लिखते हैं कि – चारि बरन सूं हरिजन उंचे। भये पबितर हरि के सुमिरे, तन के उज्ज्ल मन के सूचे। जो न पतीजै साखि बताऊं, सबरी के जूठे फल खाये।[14] हरियाणा के सन्तों में परमानन्द का नाम भी बड़े सम्मान से लिया जाता है। संत परमानन्द का विश्वास है कि सत् नाम ही आनन्द स्वरूप है। वे सभी जीवों को ईश्वर का ही रूप मानते हैं। समस्त सृष्टि के कर्ता एकाकार भगवान ही हैं। वे असीम व सर्वव्यापक हैं। उनके अनुसार इस संसार में कोई भेदभाव का स्थान नहीं होना चाहिए। सब परमात्मा की सन्तान हैं। वे लिखते भी हैं कि – सभी तुम्हारे भ्रात हैं, सभी तुम्हारे मीत। सभी अंश परम पुरुष के, रखो न भेद मन बीच।।[15] स्वामी ब्रह्मानन्द हरियाणा में महान संत थे। वे दार्शनिक चिंतक थे। समाज की एकता के लिए उन्होंने अनथक प्रयास किए। वे सच्चे समाज सुधारक थे। समाज में शांति स्थापित करने के लिए वे कहते हैं कि – सत्य से शुद्ध कर वाणी बोलो, ज्ञान ध्यान का करो विचार। मन से मननशील होकर, करना चाहिए आचार।।[16]

पं॰ साधुराम का भी हरियाणा के सन्तों में सर्वोपरि स्थान है। वे संत होने के साथ–साथ चिंतनशील कवि भी थे। उन्होंने हमेशा जनकल्याण को ही अपने जीवन में महत्त्व दिया है। उन्होंने सभी धर्मों को एक समान माना है। वे मानते थे कि मानव का धर्म है कि वह सदा ही जन कल्याण के कार्यों तथा आत्मपरिष्कार को करता रहे। साधुराम मनुष्य को व्यर्थ में भेदभाव व जाति धर्मों के झगड़ों से ऊपर उठकर जीवन यापन करने के लिए लिखते हैं कि –दो दिन की जिन्दगानी मूर्ख क्यों होरया मगरूर। काल बली का हुक्म टलै ना जाणा पडै जरूर। तेरे दफ्तर मैं लिखे कसूर धूर कै मनवा लेगा थाणा। साधु राम भजन बिना तेरा कोई नहीं साथी। माई राम दुविधा में फिरै दुनिया धक्के खाती। निक्का राम की मंडली गाती बांगर का गाणा।।[17] संत गरीबदास भी हरियाणा के सन्तों में अग्रणी एवं तेजस्वी थे। उनके हृदय में समाज में व्याप्त अनेक बुराईयों के उन्मूलन के लिए सतत ज्वाला धधक

रही थी। हिन्दू व मुस्लिम समाज में व्याप्त जातिवाद के विरोध में वे मुखर वाणी का प्रयोग करते हैं। हिन्दू समाज के संदर्भ में वे ब्राह्मणों को भी खरी खोटी सुनाते हैं – जे तू बाह्मनी जाया, तो आन अबाट क्यों नहीं आया ते घाल्या कंध जनेऊ, तूं भूल्या बाट बटेऊ। कमल तुम्हारा मुधा, एके जननि सब दूधा।।[18] गरीबदास ने तत्कालीन समाज में व्याप्त भेदभावों में लिप्त मानव को संकीर्णता से जीवन जीते देखा है। उन्होंने समाज को सुधारने के लिए अपनी वाणी के माध्यम से अनथक प्रयास किए हैं। साम्प्रदायिकता और जातिवाद के वे घोर विरोधी थे। वे कहते हैं कि – गरीब साधु–साधु सब एक हैं, इनमें कछु न भ्रांति। निरवैरी निर्भय सदा, एक जाति एक पांति।। मुसलमान को गाय भखी, हिन्दू काया सूर। गरीबदास दुहुं दीन से, राम रहीया दूर।।[19]

संत नितानंद एक विरक्त महात्मा थे। संत नितानंद ने किसी भी जाति धर्म को बुरा–भला नहीं कहा। वे सबका सम्मान करते थे। उन्होंने अपनी वाणी के माध्यम से रूढ़ियों व परम्पराओं का विरोध भी विनम्र शब्दों में किया – करता कंचन त्याग कर, किया कांच से हेत। वै नर रीते रह गये, ज्यों कालर का खेत।।[20] संत कवि जैतराम भी अपनी मातृभूमि हरियाणा से प्रेम करते हैं। वे मानते हैं कि हरियाणा के लोग समदर्शी हैं। वे परोपकार की भावना से जीवन जीते हैं। सभी एक दूसरे का सम्मान करते हैं। हरियाणा में ऊंच–नीच, जात–पात, धर्म आदि का कोई भेद नहीं है। संत कवि जैतराम के शब्दों में – जीव हिंसा जहां नाहीं करा हीं मदिरा भषै न कोई। भगति रीति सब ही त्योहारा विघन करै न कोई।।[21] संत दादू ने हिन्दू और मुसलमानों को सच्चे पन्थ की पहचान करने पर जोर दिया है। दोनों पक्ष अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने की फिराक में लिप्त हैं। दोनों के पारस्परिक भेदभाव झूठे हैं। डॉ॰ पीताम्बरदत्त बड़थल ने भी सही कहा है कि 'उस समय की यही स्पष्ट मांग थी कि हिन्दू और मुसलमान अड़ोसी–पड़ोसी की भांति प्रेम और शांति से रहें।[22] इसी आधार पर दादू कहते हैं कि – दादू हिन्दू मारग कहै हमारा, तुरक कहैं रै मेरी। कहां पंथ है कहो अलख का, तुम तो ऐसी हेरी।।[23]

निष्कर्ष

सारांशतः हम कह सकते हैं कि हरियाणा के सभी संत सामाजिक एकता के पुजारी थे। वे अखण्डता के सच्चे प्रहरी भी थे इसलिए वे एक ही ईश्वर के जीवों को भिन्न–भिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायों के रूप में विभक्त होकर एक दूसरे के साथ लड़ते देख उनके विरोधी भी थे। हरियाणा के सभी सन्तों ने एकात्मवाद पर जोर दिया। उनके अनुसार जाति धर्म के भेद–भाव समाज में निरर्थक हैं व भ्रमजाल फैलाते हैं। इसलिए उन्होंने इन सभी आडम्बरों एवं मतभेदों का घोर विरोध किया। सभी संतों ने समाज में अपनी वाणी के माध्यम से सामाजिक एकता का भाव जगाया था, जिसमें जाति–भेद, वर्ण–भेद तथा धर्म–भेद का कोई स्थान नहीं था। उन्होंने सदैव धर्म भेद को भी संघर्ष का एक प्रमुख कारण समझा और प्रगतिमय पंथ का सुझाव दिया।[24] समस्त हरियाणा का संत साहित्य युगों–युगों से पीड़ित और दिग्भ्रमित मानवता के लिए ज्योतिर्मय एवं अमृत संजीवनी रहा है। निश्चित रूप से इन सभी संतों ने समाज में व्याप्त वर्गवाद, साम्प्रदायिकता, वर्ण–भेद, अमीर–गरीब के बीच बढ़ती खाई, ऊंच–नीच आदि बुराईयों का समाधान साहित्यिक गलियारे से करने का प्रयास किया है। हम कह सकते हैं कि विज्ञान के युग में आज मानव दिशाहीन हो रहा है, वह केवल संतों की वाणी को आत्मसात करके ही सच्ची, सरल जीवन पद्धति को प्राप्त कर सकता है। अतः समता की जो भावना, मानव एकता की जो प्रेरणा संत कवियों की वाणी में साकार हुई है, उसमें लोक मंगल की साधना स्पष्ट है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *हिन्दी भक्ति साहित्य में सामाजिक मूल्य व अवधारणाएँ, डॉ॰ सावित्री चन्द्र शोभा, पृ. 186*
2. *डॉ॰ नगेन्द्र, आस्था के चरण, पृ. 186*
3. *डॉ. नामवर सिंह, इतिहास और आलोचना, पृ. 17*
4. *रवीन्द्र कुमार सिंह, संतकाव्य की सामाजिक प्रासंगिकता, पृ. 163*
5. *डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, मध्यकालीन धर्म साधना, पृ. 94*
6. *परशुराम चतुर्वेदी, दादूदयाल ग्रंथावली, पद 26, पृ॰ 274*
7. *महीप सिंह, डॉ॰ नरेन्द्र मोहल, गुरु नानक और उनका काव्य, पृ. 82*
8. *हजारी प्रसाद द्विवेदी, मध्यकालीन धर्म साधना, पृ. 216*
9. *आदि ग्रंथ, रागु आसा महला 1, पृ. 3*
10. *श्री गुरु ग्रंथ साहिब, महला 2, पृ. 469*
11. *आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, दादू दयाल ग्रंथावली, पृ. 271*
12. *श्री सतगुरु ब्रह्मानन्द पचासा, पृ. 13*
13. *वही, पद 02, पृ. 9*
14. *चरनदास की बानी, भाग 1, पृ. 55*
15. *परमानन्द, हंस चेतावनी, पृ. 117*
16. *ब्रह्मानन्द पचासा, पृ. 21*
17. *साधुराम, भजनोपदेशमाला, पृ. 34*
18. *गरीबदास, ग्रंथ साहिब, पृ. 103*
19. *वही, पृ. 214*
20. *नितानन्द, सत्य सिद्धान्त प्रकाश, पृ. 117*
21. *बेनामी, बोध, पृ. 106*
22. *स॰ पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय, पृ. 15*
23. *संत कुमार (दादूदयाल) खण्ड 1, पृ॰ 495*
24. *रवीन्द्र कुमार सिंह, संत–काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता, पृ. 122*